# भूमिका ।

श्री मान नीय भारतक मानव समाजके प्रति मेरा सादर निवेदन है कि गत वर्ष मथुरामें स्वनाम धन्य स्वामी दयानन्द जी महाराजकी शताब्दी मनाई गई थी उसमें समयकी महिमासे वर्षों से बिछुड़े हुये सभी सम्प्रदायके विद्वान मण्डल का आवाहन किया गया था लिहाजा इसीलिए सप्रेम जैन समाजके प्रसिद्ध विद्वान प० प्र० श्री विजयेन्द्र सूरिजी भी अपने जैन सिद्धान्त की कतिपय बातोंको लेख द्वारा उक्त सभामें भेजनेमें बाध्य हुये थे। आपने अपने लेखमें जैन समाजका सारगर्भित बहुतसी बातें दिखाई जैसेकि (१) जैन धर्म (२) जैन धर्मकी प्राचीनता (३) तत्वज्ञान (४) जैन दर्शनमें तत्व नव (५) ईश्वर (६) स्याद्वाद (७) जैन साहित्य (८) जैन इतिहास (९) अहिंसा (१०) अपने विचार (११) इष्टदेवसे प्रार्थना

सूरिजी महाराजने जैन साहित्यार्णव मथन करके सुधा सम उक्त विषयोंका निर्धारण करना सूरिजी महाराजके अपूर्व विद्याका परिचायक है इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि इसी प्रकार श्वेताम्बर पीताम्बर दिगाम्बर प्रभृति जैन धर्म प्रचारक सम्मिलित होकर जैन धर्मकी मान महिमा अक्षुण रखनेकी यदि भरसक कोशिश करें तो मेरा विश्वास है कि मध्यान्ह कालीन सूर्यकी भांति जैन धर्म संसारमें अपना प्रचण्ड प्रताप

फिरसे प्रकाश करके संसारको सन्मार्गपर लानेका अपूर्व लाभ उठा सकता है मैं सूरिजी महाराजको अनेक धन्यवाद देता हूं कि आपने जैन महत्ता जनताके समक्ष प्रकट करके जैन धर्मकी बड़ी वृद्धि की। एवं जैन श्वेताम्बर सभा मुलतानको भी हृदयसे धन्यवाद देता हूं कि जिसने इस पुस्तकके छपानेमें धनसे प्रयत्न किया। मैं आशा करता हूं कि जैन समाज तथा अन्य समाजको भी इस पुस्तकसे विशेष लाभ होगा

और मेरे परम स्नेही स्वर्गस्थ श्रावक बाबू चान्दाराम चेलारामजी को भी धन्यवाद देता हूं कि जिनके प्रबल स्नेह भक्तिके वश होकर मैं इस ट्रैक्टके संशोधन तथा भूमिका लिखनेमें प्रवृत्त हुआ। आशा है सज्जन गण इस ट्रैक्टसे अवश्य लाभ उठाकर मुझको अनुगृहीत करेंगे।

(नोट) और मैंने जैन धर्मके प्रचारके लिये निम्नलिखित पुस्तकें तैयार की हैं जैसेकि जैनविवाह पद्धति पर्यूषण कर्त्तव्य दीपमालिका पूजा। मुझको आशा है सारग्राही जैन श्रावक इन पुस्तकोंको अवश्य अपनावेंगे और मेरे परिश्रमको सार्थक करेंगे। यह पुस्तकें यहां बिना मूल्य मिल सकती हैं।

आपका हितैषी—
सूर्य्यमल यति
नं० ३१ बांसतल्ला गली
पोस्ट बड़ाबाजार कलकत्ता।

# जैन-धर्म

---

( मंगला चरण )

यस्य प्रौढ़ तम प्रताप तपन प्रोद्दाम धामा,
जगत् जवाल कलिकाल केलि दहनो मोहाध
विध्वसक नित्योद्यात पद, समस्त कमला केली
गृह राजते स श्री पार्श्व जिनो जने हितकृतौ
चिन्तामणि पातुमा ॥ १ ॥

जैन धर्म एक स्वतन्त्र धर्म है। उच्च तत्व ज्ञान, मनोरम साहित्य और उपदेशपूर्ण प्राचीन इतिहाससे समृद्ध और शोभायमान होनेसे सर्व साहित्य प्रेमियोंको भी वह अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

जर्मन विद्वान् डा० हर्मन जे को बी ने कहा है —

"In conclusion let me assert my conviction that Jainism is an original system, quite distinct and independent from all others and that, therefore, it is of great importance for the study of philosophical thought and religious life of Ancient India."

वह कहते हैं कि अन्तमें मैं इस निर्णयपर आ गया हूँ, कि जैन धर्म अत्यन्त प्राचीन व अन्य धर्मोंसे पृथक एक स्वतन्त्र धर्म है। इसलिये हिन्दुस्थानके प्राचीन तत्व ज्ञान और धार्मिक जीवन जाननेमें वह अत्यन्त उपयोगी है।

एक समय वह था कि जब जैन धर्मके विषयमें बड़े २ विद्वानोंमें भी भारी अज्ञान था। कोई जैन धर्मको ब्राह्मण धर्मकी। तो कोई बुद्ध धर्मकी शाखा समझते थे। कोई महावीर स्वामी को जैन धर्मका आद्य प्रवर्तक मानते थे।

बहुतसे तो इस धर्मको नास्तिक बताते थे और ऐसा कहने वालोंका आज भी अभाव नहीं है परन्तु इस धर्मके साहित्य के दृढ परिचय से विद्वानोंमें इस बातका ठीक निर्णय हो चुका है कि भगवान बुद्धके पूर्व भी जैन धर्मका प्रचार था। महावीर स्वामी जैन धर्मके एक सुधारक थे आद्य प्रवर्तक नहीं।

प्रथम पश्चिमी विद्वान ब्राह्मण और बुद्ध धर्मसे परिचित हुए। जैन धर्म सम्बन्धी उनका ज्ञान अत्यल्प था, जैन धर्म सम्बन्धी यथार्थ ज्ञान न होनेसे, महावीर स्वामी और भगवान् बुद्ध समकालीन होनेसे और दोनोंके कथनमें और जीवनमें कुछ साम्यता प्रतीत होनेसे वे बौद्ध और जैन धर्म को एक मानने लगे, परन्तु जैन धर्मसे उनका परिचय जैसे२ बढ़ता चला वैसेही उसके सिद्धान्त और इतिहास बौद्ध धर्मसे कितने भिन्न और महत्वके हैं,

यह उन्हें साफ २ प्रतीत होगया। इस . डा० जेकोवी, डा० स्टीइन कीनों, डा० हेल माउथ तथा अन्य २ विद्वान् जैन तत्व ज्ञान और साहित्यका अभ्यास कर रहे हैं और यूरूप के देशोंमें उसका प्रकाशन भी •м होगया है,

जैन धर्मके अमूल साहित्यसे परिचय और संशोधक बुद्धिका अभाव यही इस धर्म पर किये हुए आक्षेपों की जड़ है

## प्राचीनता ।

इतिहासका अवलोकन करनेसे मालूम होता है कि जब हज़रत मूसाका यहूदी धर्म, प्राचीन चीनका कनफ्यूशियस धर्म, बुद्ध भगवान का बौद्ध धर्म, महात्मा ईसा का ईसाई धर्म, हजरत मुहम्मदका ?I मुहम्मदी धर्म, यह सब धर्म भविष्यताके गर्भमें शान्ति का

अनुभव कर रहे थे, उस समय अर्थात् आजसे २४५१ वर्ष पूर्व भगवान् महावीर ने प्राचीन जैन धर्ममें सुधार करके उसका प्रचार किया था। इससे यह निर्णय अनिवार्य है कि ऊपर बताये हुए सर्व धर्मों से जैन धर्म अत्यन्त प्राचीन है। केवल ब्राह्मण धर्म या वैदिक धर्म यह ही एक प्राचीन धर्म है परन्तु इन दोनो मेसे कौनसा है धर्म अधिक प्राचीन है, यह विधान करना कठिन है। तोभी हम देख सक्ते है कि जैसे बौद्ध धर्मीय त्रिकट ग्रन्थ, महावग्ग और महा परि निब्बाण सूत्र आदि ग्रन्थोमें महावीर स्वामीजी के सम्बन्धमें कुछ बाते निकलती हैं वैसे ही रामायण महाभारतमें भी जैन धर्मका निर्देश मिलता है। हिन्दू धर्म शास्त्रोमे भी उसका निर्देश है।

जैन धर्मके आदि तीर्थङ्कर ऋषभ देवका वर्णन श्रीमद्द भागवत पुराणके पञ्चमस्कध में

मिलता है। जिसकी स्मृतिमें हमारे देशको भारत वर्ष नाम दिया गया। उस भारतके पिता यह ऋषभ देवजी हैं। उसमें बताया गया है कि ऋषभ देव साक्षात विष्णुके अवतार थे। इतना ही नहीं, वेदोंमें भी जैन तीर्थङ्करों के नाम आते हैं वे सब वेद प्रणीत नहीं हैं परन्तु वे तीर्थङ्करो केही नाम हैं। इतिहास वेत्ताओंके अनुवेषण के फल रूप इस निर्णयके लिये कई प्रमाण मिल जाते हैं।

डा० गेरीनीटने कहा है कि ---

There can be no longer any doubt that Parshwanath was an historical personage. According to the Jain tradition he must have lived a hundred years and died 250 years before Mahaveer. His period of activity, therefore, corresponds to the 8 th, Century B C. The parents of Mahaveer were followers of the religion of Parshwanath. Upto the age we live in there have appeared 24 prophets of Jainism. They are

ordinaarily called Teerthankaras

With 23 rd Parashwanath we enter into the region of history and reality

अर्थात् इसमें अब तनिक भी सदेह नहीं है कि पार्श्वनाथ ऐतिहासिक पुरुष थे। जैनग्रन्थोंमें उनकी आयु सौ वर्ष की बताई गई है और उनका अन्तकाल महावीरके पहिले २५० वर्ष कहा गया है। उस पर से पार्श्वनाथ के प्रवृत्तिका समय ईसवी सन् के पूर्व आठवे शतकमें आता है महावीरके माता पिता पार्श्वनाथके धर्मके अर्थात् जैन धर्मी ही थे जिस युगमे हम रहते हैं जैन धर्मके चौवीस तीर्थङ्कर यानीप्र वर्तक हुएहैं (और) तेईसवें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथसे तो इतिहासका भी प्रमाण मिलता है, सारांश यह है कि इन सब प्रमाणोसे यह नि सन्देह सिद्ध होता है कि जैन धर्मही सबसे प्राचीन धर्म है। महावीर स्वामी उसके अन्तिम

तीर्थङ्कर थे और वह बुद्ध भगवान्के समकालीन थे। ऋषभ देव उसके प्रथम तीर्थङ्कर होगये जिनका काल अत्यन्त ही प्राचीन है

तत्त्व ज्ञान

जैन धर्मका तत्त्व ज्ञान उच्च श्रेणीका है। उसमें धर्म और नीति की मीमांसा अनुपम है। कर्तव्या कर्तव्य विचार और चारित्र विवेचन अत्युत्तम है। जैनदर्शनमें आध्यात्मिक अर्थात् मोक्ष आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में स्पष्ट व्यवस्थित और बुद्धि ग य विवेचन मिलता है। पदार्थ विज्ञानके लिये उसका न्याय (विचार शास्त्र) भी सरल और सूक्ष्म होनेसे जैन तत्त्व ज्ञान गहन महत्त्व पूर्ण और उदार होगया है। मध्यस्थ भावसे पढ़ने वालेको प्रतीत होता है कि वह कितना सम्पूर्ण है। इतनाही नहीं, उसको पढ़नेसे उसके हृदयमें अनुपम आनन्द का अनुभव होगा,

जिन्होने - जैन - धर्मका तुलनात्मक अभ्यास किया है, जैन धर्मकी मुक्त कठ से प्रशसा की है।

यह जगत क्या है ? वह हमको जड़ और चेतन इन दो रूपोमें प्रतीत होता है। समग्र ससार इन दो तत्वोमें आजाता है। ज्ञान शक्ति यही आत्माका मुख्य लक्षण है। जो चेतन्य स्वरूप ज्ञान युक्त है वही जीव है और उस से विपरीत जो ज्ञान हीन है वही जड़ कहा जता है।

जैन तत्व ज्ञान इतना उन्नत है कि वह वनस्पति, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि सबमें जीवका प्रति पादन करता है। उसमें स्थूल और सूक्ष्म ऐसे दो भेद हैं। वर्तमान वैज्ञानकोकी भी यह मान्यता है कि पाषाणमें भी सूक्ष्म जीव है। थेक्सस नामक एक प्राणी उन्होने पाया है जो इतना सूक्ष्म है कि,

एक सुई की नाक पर ने एक लाख प्राणी आराम से रह सक्ते हैं।

प्रसिद्ध विज्ञान-विशारद श्री जगदीस चन्द्र बोसने अपने प्रयोग द्वारा सिद्ध किया है कि पौदोंमें भी क्रोध लोभ आदि विकार पाये जाते हैं। वे सब जीव धारी होते हैं यह सिद्धान्त जैन दर्शन ने हजारों वर्ष पहिले प्रति पादित किया था,

बहुतसी बातें ऐसी दिखाई देती हैं जिनसे कि यह अनुमान हो सक्ता है कि वह काल दूर नहीं है जिसमें जैन शास्त्रके समग्र सिद्धान्त संसार भरमें स्वीकार हो जाएंगे।

## जैन दर्शनमें नव तत्त्व

१ जीव २ अजीव, ३ पुण्य (अच्छे कर्म) ४ पाप (बुरेकम), ५ आश्रव, (आत्माके साथ कर्मोंका सम्बन्ध होनेका कारण), ६ सवर, (आगामी

कर्मोंको रोकने वाला आत्मा का परिणाम,), ७ बंध (कर्मोंका आत्माके साथ दृढ़ सम्बन्ध) ८ निर्जरा (कर्मों का क्षय), ६ मोक्ष।

जैन तत्वज्ञानका आधार कर्म है। कर्मका, आत्माके साथ अनादि सम्बन्ध है। स्वभावसे आत्मा सच्चिदानन्द रूप है परन्तु कर्मों के, आचरणसे उसका मूल स्वरूप ढक जाता है। जैसे २ कर्मका नाश हो जाता है वैसे २ आत्माका शुद्ध स्वरूप प्रकाश होजाता है, यही आत्म साक्षात् कार है और इसी शुद्ध स्वरूपमें मोक्षका सुख प्राप्त होना है।

जीव जैसे कर्म करे वैसे उसे भोगनेही पड़े गे, इसलिये जहांतक कर्मोंका समूल नाश न होगा वहांतक उसे जन्म-मरणके क्लेश सहने ही होंगे।

सम्यक ज्ञान ( *Right knowledge* ), सम्यक् दर्शन ( *Right belief* ) सम्यक्

चारित्र्य (*Right conduct*) यह त्रिपुटी मोक्षका साधन है। आत्मा नित्य है। समस्त कर्मोंका क्षय करके मोक्षका अखण्डानन्द जिन्होंने प्राप्त किया है वे पुरूष मुक्त हैं, उनके लिये फिर जन्म मरण नहीं है यह जैन शास्त्रका सिद्धान्त है। जगत्में जब अधर्म बढ़ जाता है ऐसे समय महान् आत्मा अवश्य जन्म लेते हैं। तीर्थ करोंके जन्मसे यह बात निश्चित है तो भी मुक्त आत्माओंका पुन जन्म धारण करनेके लिये कोई कारण नहीं है। भगवद्‌गीतामें बताये हुए कर्मयोग ही को जैन शास्त्र पुरुषार्थ कहते हैं। यह कर्मवादका पुरस्कार नहीं है परन्तु बिना किसीकी सहायताके जीवन मुक्त कैवल्यावस्था प्राप्त करनेका पुरुषार्थ ही जैन शास्त्रोंने प्रतिपादित है। आत्माको सम्यक् ज्ञान अर्थात् केवल ज्ञान प्राप्त होनेसे वह जगत को समस्त भावोंमें जान सकता है, उसको

प्रयत्न कह सक्ता है और उसीके बाद वह मोक्ष पद पर पहुचता है। मुक्त आत्माओके निर्मल आत्म-ज्योतिमें जो आनन्द स्फुरता है वही परम सुख है। ऐसे मुक्त आत्माओ को ही जैन शास्त्रोमें शुद्ध बुद्ध निरजन पर ब्रह्म इत्यादि कहा है।

## ईश्वर

ईश्वर सम्बन्धी विचारमे जैन शास्त्रोने एक नवीन मार्ग किया है। किसी अन्य धर्ममे यह नहीं मिलता। यह इसका भूषण है। परिक्षीण-सकल-कर्मान् इश्वर, जिसके समस्त कर्म समूल क्षयको प्राप्त होगए है वही ईश्वर है यह जैन शास्त्रका सिद्धान्त है। इसलिये ईश्वर एकही है यह सिद्धान्त उसको सम्मत नहीं है। एक मात्र परमात्म स्थिति को पहुचे हुए सर्व सिद्ध पुरुष एकाकार होनेसे

समष्टि रूपसे उनका एक वचनमें व्यवहार हो सक्ता है।

जैन धर्मका एक सिद्धान्त विचार शील विद्वानोंके मन को आकर्षित करता है। वह यहकि ईश्वर जगतका कर्त्ता नहीं है। वीतराग ईश्वर न किसीसे प्रसन्न होते है न किसीसे नाराज क्योंकि राग और द्वेषका उनमें सर्वथा अभाव है, निर्मल परम कृतार्थ ईश्वर संसारका कारण क्यों बने। सामान्य बुद्धि वाला जब देखता है कि जगत्की सभी चीजें किसी न किसी की बनाई हुई होती है तब वह अनुमान कर लेता है कि जगत भी किसीका बनाया हुआ होगा। परन्तु यह केवल भ्रम है। क्योंकि सर्वथा राग द्वेष इच्छा आदिसे रहित परमात्मा को (ईश्वरको) जगत् बनानेसे क्या प्रयोजन? ईश्वरको जगत्का कर्त्ता माननेमें और भी कई आपत्तियां खड़ी हो जाती है।

तोभी एक प्रकारसे ईश्वर जगत्का कर्त्ता हो सक्ता है।

परमेश्वर्ययुक्तत्वात् मन आत्मेव वेश्वर।
स चकरोतिनिर्दोप कर्तृ वादो व्यवस्थित॥

परमेश्वर्य सेयुक्त होनसे मन या आत्मा यही ईश्वर है और यही कर्ता समझना चाहिये। दोप नहीं है क्योंकि आत्मामें उपरोक्त स्वभाव सिद्ध है।

ईश्वर जगत्का कर्त्ता नहीं है यह केवल जैन मतमें ही नहीं है, वैदिक मतकी कई शाखाओं में भी ईश्वरको जगतका कर्त्ता नहीं माना है (देखो वाचस्पति मिश्रकी सॉख्यतत्व कौमुदी, कारिका।

## स्याद् वाद्

अनेक प्रमाणोसे जैन शास्त्रमे स्याद् वाद् सिद्ध किया है जिसको देखकर विद्वानोको

बहुत ही आश्चर्य होता है। एकस्मिन् वस्तुनि सापेक्ष रीत्या विरुद्ध नाना-धर्म स्वीकारो हिस्याद्वाद एकही वस्तुको अपेक्षा पूर्वक भिन्न २ दृष्टिसे अवलोकन करना स्याद्वाद है। जब हम कुछ भी विधान करते हैं उसमें लक्षित अर्थसे भिन्न अन्य अर्थ सम्बन्धी एक और भी विधान समाविष्ट होता है। यह मेरा भाई है, इस विधानमें वह मेरा भाई है यह निर्देष है तो भी उसमें वह किसीका पुत्र और किसीका पिता है यह भी विधान गर्भित है। वस्तु मात्र को अपेक्षा दृष्टिसे नित्यानित्य माननेसे सर्व ही पदार्थ उत्पत्ति स्थिति और नाश इन स्वभाओंसे युक्त है यह सिद्ध होता है

बारीकीसे देखनेसे प्रतीत होता है कि सभी दर्शन कारोंको स्याद्वाद स्वीकार करना पड़ा है।

# साहित्य



जैन साहित्य अत्यन्त विशाल है। ऐसा कोई भी विषय नही कि जिस विषयमे जैन प्रणीत उत्तमोत्तम और विद्वत्ता पूर्ण ऐसा कोई ग्रन्थ न हो। जैन दर्शनके ४५ शास्त्र ग्रन्थ है जिनको सिद्धान्त या आगम कहते हैं। उनमें ११ अङ्ग, १२ उपाङ्ग, ६ छेद सूत्र, ४ मूल सूत्र ०१ प्रकीर्ण ग्रन्थ हैं। प्राचीन समयमे शास्त्र लिखे नहीं जाते थे, शिष्य परम्परा द्वारा जिह्वाग्र करा याद रखे जाते थे, समय आनेपर उनको पुस्तकोंके रूपमें लानेकी आवश्यकता हुई। आश्रमोमें जो उपदेश है वह महावीर स्वामीके जीवनका और उनके उपदेशका सार है। यह द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्म-कथानुयोग और एव चरण करणानुयोग इन चार विभागो मे बॅटा हुआ है।

चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, लोक प्रकाश इत्यादि ग्रन्थ अप्रतिम हैं इनमें सूर्यचन्द्र तारागण असरव्य द्वीप समुद्र स्वर्ग नरकादि लोक सम्बन्धी बातें मिलती हैं।

हरि सौभाग्य विजय प्रशस्ति धर्म शर्माभ्युदय, हम्मीर मद मर्दन, पार्श्वाभ्युदय आदि काव्य ग्रन्थ, सम्मतितर्क, स्याद्वाद-रत्नाकर आदि न्याय ग्रन्थ योगबिन्दु योगदृष्टि समुच्चय आदि योग ग्रन्थ, ज्ञानसार, अध्यात्म सार, अध्यात्म कल्पद्रुम, अध्यात्म तत्वावलि इत्यादि आध्यात्मिक और सिद्ध हेमचन्द्र आदि व्याकरण ग्रन्थ सभी जैन साहित्यके शोभन अलङ्कार हैं।

प्राकृत भाषाका मौलिक साहित्य जैन पण्डितोंकी कृतियां है। न्याय, तत्वज्ञान, नीति और गद्य पद्यके अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थोंसे जैन साहित्य ओत प्रोत है। जैन कथा साहित्य बहुत ही सुन्दर है, स्तोत्र स्तुतियां और पुरानी

गुजराती भाषाके रास इसी साहित्यके अलङ्कार हैं।

जैन साहित्यके विषयमें *Dr. Johns Hutel* लिखता है। *They are the creatures of a very extensive popular literature*, अर्थात् जैन साहित्यमें सामान्य जनताके लिये उपयोगी ग्रन्थ असंख्य हैं।

प्राकृत संस्कृत गुजराती हिन्दी और तामिल इन भाषाओंमें जैन ग्रन्थ लिखे गए हैं।

श्रीमद् सिद्ध सेन दिवाकर, श्रीहरिभद्रसूरि उपाध्याय, यशोविजयजी उपाध्याय, विनय विजयजी, श्रीमद् हेमचन्द्रा चार्य्य इत्यादि जैन महापुरुषोंने जैन साहित्यकी समृद्धिमें अपने जीवन सार्थक किये।

गत २५-३० वर्षसे जैन साहित्यका प्रचार विशेषतासे आरम्भ हुआ है और तबसे इङ्गलैंड जर्मनी , इटली और चीन इन

जैन साहित्यका प्रचार अच्छी प्रकार चल रहा है। स्वर्गस्थ गुरुदेव जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मसूरिजी महाराजके दीर्घ प्रयत्नसे इस समय भी जैन साहित्यका प्रचार और अभ्यास अनेक देशोंमें हो रहा है।

हमारा यह दृढ विश्वास है कि जैसे जैसे जैन साहित्य अधिक प्रमाणसे लोग पढ़ने लगेंगे और तुलनात्मक दृष्टिसे उसपर विचार करेंगे वैसे उसका मनोहर परिमल संसारभरमें फैलेगा और वास्तविक अहिंसा धर्मकी संसार को शिक्षा देगा।

## जैन इतिहास।

जैन तथा जैनेतर विद्वानोंका आकर्षण जैन इतिहासकी ओर जैसा होना चाहिये वैसा नहीं हुआ। जैनोंका प्राचीन इतिहास गुजरातका प्राचीन इतिहास है और इस दृष्टिसे

जैन लोगोने गुजरातके इतिहासकी रचा की, ऐसा कह सक्ते हैं। बहुतसे ग्रन्थ शिलालेख पट्टक, मूर्त्तियां मोहरें, और तीर्थ स्थान हे। जिनसे जैन इतिहासका अन्वेषण हो सक्ता हे।

जैन राज्य खारवेलकी बनाई हुई गुफाएं शत्रुंजय पर्वत परके मन्दिर, जैनोके श्रेष्ठ स्थापत्य और शिल्प केनिदर्शक हैं।

अनेक जेन राजा हुए हे। जैसे श्रेणिक, कोणिक, कुमारपाल इत्यादि और वस्तुपाल तेजपाल लामाशाह चम्पाशाह आदि बहुतसे जैन मन्त्री हो गए जिन्होने राज्य शकट चलाए थे।

## अहिंसा ।

अहिसा यही हमारा विश्व सदेश हे। ससारके सभी धर्मोमें अहिसाको स्थान है परन्तु जैसा अहिसा धर्म इसमे हैं कहीं भी मिलना

कठिन है, कई प्रतिष्ठित आदमियोका आक्षेप है, कि अहिंसा धर्मसे संसारकी महान् हानि हुई है। जनताका निर्वीर्य और डरपोक होना इसी धर्मके संस्कारोंका फल है परन्तु यह अज्ञान है। अहिंसा धर्म पालन करनेवाले धर्मके लिये लड़े हैं और उन्होंने राज भी किये हैं। अहिंसा धर्ममें जो आत्म शक्ति है संयम और विश्व प्रेम है वह इतर मिलना मुशकिल है अहिंसाके विषयमें ऊपर कहे हुए आक्षेप वही करते हैं जो जैन शास्त्रमें प्रतिपादित साधु धर्म और गृहस्थ धर्म पृथक् पृथक् समझते नहीं हैं दोनोंको पृथक् धर्म जाननें वाला ऐसा आक्षेप कभी नहीं, करेगा।

भारत गौरव लोक मान्य तिलकने अपने व्याख्यानमें एक समय कहा था—

'अहिंसा परमो धर्म, इस उदार सिद्धान्त ने ब्राह्मण धर्म पर चिर स्मरणीय छाप मारी

है। और घोर हिंसाको वैदिक धर्मसे विदा करानेका श्रेय जैन धर्मके हिस्से हीमें है।' वैसेही डा० स्टीनको नो कहते हैं—

इस समय भी अहिंसा की शक्ति पूर्ण तया जाग्रत है। जहा २ भारतीय विचार या भारतीय सभ्यताने 'प्रवेश' किया है वहाँ सदाके लिये भारतका यही सन्देश रहा है। इतना ही नहीं, वरन समस्त ससारके लिये भारतका यही गगन भेदी सन्देश है'। मैं आशा रखता हू और मुझे इस बातका विश्वास है कि देव भूमि हिन्दुस्तानका भाग्य भविष्यमे चाहे कैसा भी रहे भारत वासियों का यह सिद्धान्त अमरही रहेगा।

वैष्णव शैव ईसाई और इस्लामी धर्म भक्ति मार्ग सिखाते हैं। वेदान्त ज्ञान मार्ग की शिक्षा देता है। फर थोस्ती चारित्र सुधार करते हैं और बौद्ध और जैन अहिंसा

और दया इन महान् सिद्धान्तोका ढंढोरा पीटते हैं। ब्राह्मणोको जैनियोने अहिंसक बनाया और गुजरातको जहाँ कि जैन धर्म विशेष प्रमाणमे मिलता है अहिंसा और दया धर्मका केन्द्र बनाया।

महान धर्मोमें जैन धर्मकी विशेपता अहिंसा हीमें है। और यह भी सामयिक विशेपता है कि जैन साधुओके आचार और रहन सहन ससार भरमे अत्यन्त प्रशसनीय माने जाते हैं, इस बीसवें शतकमे जबकि अन्य मतके साधुओने प्राचीन साधु आचारको छोड़कर प्राप्त सुविधाओका सेवन आरम्भ कर दिया है। इस ऐशो आरामके समयमें जगत्को निवृत्ति प्रधान जैन सिद्धान्त किस प्रकार प्रिय लगेंगे? उसका मुख्य अङ्ग जो त्याग है वह उनसे कैसे बनेगा? परन्तु यह बात परम निश्चित है कि अन्तमें सभीको उसी कामको

करना होगा। सज्जनो! जिस धीरता शान्तिके साथ आप लोगोंने मेरा यह व्याख्यान सुन लिया है उसके लिये मैं आप लोग -अंत करण पूर्वक धन्यवाद देता हू। साथ यह भी अनुरोध, करता हू कि धर्मके सामान्य तत्त्वोंमे कहीं भी मतभेद नहीं पाया जावेगा। *Eternal truth is one but it is reflected in many ways in the minds of the singers* अगर हरएक धर्मका तुलनात्मक अभ्यास किया जाए और पक्षपात रहित उदार अंत करणसे उनका विचार किया जाए तो मतभेदके लिये बहुत ही कम अवकाश रहेगा।

## विचार

भारतके धार्मिक उत्थानके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह अपने धार्मिक क्लेशोंको दूर करे। तभी भिन्न २ मतवालों

में ऐक्यका उद्भव होगा जिसके बलसे हम जगत्को अपना सत्य ऐश्वर्य बता सकेंगे।

प्रार्थना

जैन धर्म जिसका पालनके बल गुजरातमें विशेपतासे होता है भारत और समस्त संसार भी उसे प्रेमकी दृष्टिसे देख रहा है। वह समस्त भारतका और समस्त संसारका धर्म बने यही मेरी इष्टदेवसे प्रार्थना है।

उपसर्गाः क्षय यान्ति छिद्यन्ते विघ्नवल्लय
मनः प्रसन्नता मेति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

विजयेन्द्र सूरि ।